प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23

Sample Paper - 2

विषय हिंदी (आधार)

(विषय कोड -302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे | अधिकतम अंक – 80

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[10]**

1971 के भारत-पाक युद्ध में समुद्र में जीत हासिल करने में भारतीय नौसेना द्वारा निभाई गई निणार्यक भूमिका की याद में प्रति वर्ष 04दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम अपने शहीदों को श्रध्दांजलि अर्पित करते हैं तथा अपने सेवानिवृत्त सैनिकों और युद्ध-विधवाओं के बलिदान को याद करते हैं। इस दिन भारतीय नौसेना राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति अपनी वचनबद्धता और निष्ठा को दोहराती है। भारत की समुद्री शक्ति के प्रमुख उपादान और अभिव्यक्ति के रूप में समुद्री अधिकार-क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा की निगरानी और उसमें बढोत्तरी के लिए भारतीय नौसेना एक अहम भूमिका का निर्वाह करती है अधिकांशत: जनता की नजरों से दूर 'खामोशी के साथ काम करने वाली इस सेना' के आकार और क्षमता में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वृद्धि हुई है, जो सतत रूप से बढ़ते इसके कार्यक्षेत्र तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में इसके बढ़ते महत्व के अनुरूप है। नौसेना की सक्रियात्मक गतिविधियों में तदनुसार संगत विस्तार हुआ है तथा इसमें हिंद महासागरीय क्षेत्र तथा उससे परे के क्षेत्रों का भी समावेश हो गया है। यह जानकर शुख्द अनुभूति होती है कि नौसेना हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की निरंतर चौकसी कर रही है और उनमे पेश आने वाले खतरों और चुनौतियों का हमेशा तेजी से और पूरी दक्षता के साथ मुकाबला किया है। समुद्री डकैती की रोकथाम, प्राक्रतिक आपदाओं और मानवीय त्रासदी के दौरान तत्काल सहायता उपलब्ध कराने में भारतीय नौसेना की अनवरत प्रतिवद्धता वास्तव में सराहनीय है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे समर्पित और निष्ठावान नौसेना कार्मिक राष्ट्र द्वारा उन्हें सौंपे गए दायित्वों को पूरा करने के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे।

(i) **परम्परागत** शब्द से क्या तात्पर्य है?

i. परम्परा से गए हुए

ii. परम्परा से मिले-जुले

iii. परम्परा से आए हुए

iv. पराए वश में पड़े हुए

(ii) भारत-पाक युद्ध कब हुआ था?

i. 1971 में

ii. 1972 में

iii. 1965 में

iv. 1947 में

(iii) यह जानकर बहुत आनंद पाप्त होता है कि हमारी नौसेना-

i. विशाल समुद्री सीमा की चौकसी कर रही है।

ii. विशाल युद्धों में भाग लेती है।

iii. जनता की नज़रों से दूर रहकर काम करती है।

iv. विशाल हिन्द महासागर में स्थित है।

(iv) अहम भूमिका से क्या तात्पर्य है?

i. अहंकार से भरी भूमिका

ii. अभिमान से पूर्ण भूमिका

iii. महत्वपूर्ण भूमिका

iv. अपनी भूमिका

(v) नौसेना दिवस कब मनाया जाता है?

i. 2 दिसंबर

ii. 3 दिसंबर

iii. 4 दिसंबर

iv. 5 दिसंबर

(vi) नौसेना दिवस पर भारतीय नौसेना क्या करती है?

i. राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति वचनबद्धता को निभाती है।

ii. अपने दायित्वों का निर्वाह

iii. अपने कर्तव्यों का निर्वाह

iv. सेना के कर्तव्यों का निर्वाह

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

I. भारतीय नौसेना की भूमिका की याद में नौसेना दिवस मनाया जाता है।

II. भारतीय नौसेना हमारे राष्ट्र की सेवा कभी-कभी करती है।

III. समुद्री डकैतों को रोकने में भारतीय नौसेना सहायक होती है।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

i. I और II

ii. II और III

iii. I और III

iv. I, II और III

(viii) नौसेना का विस्तार कहाँ तक है?

i. हिन्द महासागर तक

ii. हिन्द महासागर से परे

iii. हिन्द महासागर से पहले

iv. हिन्द महासागर से अरब तक

(ix) नौसेना किसकी चौकसी कर रही है?

i. हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की

ii. हमारी संक्षिप्त समुद्री सीमाओं की

iii. हमारी सेना की

iv. हमारी वायु सेना की

(x) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): 4 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है ।

कारण (R): भारतीय नौसेना ने 1971 के युद्ध में एक अहम भूमिका निभाई थी ।

i. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ii. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

iii. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

iv. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हम जब होंगे बड़े, देखना
ऐसा नहीं रहेगा देश।
अब भी कुछ लोगों के दिल में
नफरत अधिक प्यार है कम,
हम जब होंगे बड़े, घृणा का
नाम मिटा कर लेंगे दम।
हिंसा के विषमय प्रवाह में
कब तक और बहेगा देश?
भ्रष्टाचार, जमाखोरी की
आदत बड़ी पुरानी है,
ये कुरीतियाँ मिटा हमें तो
नई चेतना लानी है।
एक घरौंदे जैसा आखिर
कितना और ढहेगा देश ?
इस की बागडोर हाथों में
जरा हमारे आने दो,

पाँव हमारे थोड़े-से बस,
जीवन में टिक जाने दो।
हम खाते है शपथ, दुर्दशा
कोई नहीं सहेगा देश।
हम भारत का झंडा हिमगिरि
से ऊँचा फहरा देंगे,
रेगिस्तान बंजरों तक में
हरियाली लहरा देंगे।
घोर अभावों की ज्वाला में
बिल्कुल नहीं दहेगा देश।

(i) कवि क्या बनना चाहता है?

क) अधिनायक | ख) प्रधानमंत्री

ग) लोकनेता | घ) राष्ट्रपति

(ii) कवि के मन में नई चेतना तब आएगी जब-

क) भ्रष्टाचार, जमाखोरी आदि कुप्रथाएँ समाप्त हो जाएँगी | ख) पुरानी प्रथाएँ समाप्त हो जाएंगी

ग) सब प्रगति करेंगे | घ) कवि के हाथ में बागडोर आएगी

(iii) काव्यांश का मूल स्वर क्या है?

क) प्रश्न का | ख) चुनौती का

ग) चिंता का | घ) संकल्प का

(iv) कवि कौन-सा परिवेश बदलना चाहता है?

क) शांति का | ख) घृणा का

ग) संघर्ष का | घ) प्यार का

(v) कवि की क्या अवस्था है?

क) वृद्धावस्था | ख) प्रौढ़ावस्था

ग) बाल्यावस्था | घ) युवावस्था

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता भी तो है।
सामने गियर के ऊपर
हुक से लटका रखी हैं

काँच की चार गुलाबी चूड़ियाँ
बस की रफ्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं।
झुक कर मैंने पूछ लिया
खा गया मानो झटका
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला हाँ साहब
लाख कहता हूँ नहीं मानती है मुनिया।
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ
किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से

(i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने किसकी चर्चा की है?

क) समाज के स्वरूप की
ख) बस ड्राइवर और एक पिता दोनों की
ग) बस ड्राइवर की
घ) एक पिता की

(ii) कवि ने ड्राइवर से क्या प्रश्न किया?

क) बस कहाँ जाएगी
ख) बस में टिकट कहाँ मिलेगा
ग) चूड़ियाँ किसने लटकाई हैं
घ) मुनिया कौन है

(iii) काव्यांश में बस ड्राइवर का कैसा चित्र उभरकर आता है?

क) अत्यंत क्रूर एवं लालची व्यक्ति का
ख) इनमें से कोई नहीं
ग) अत्यंत कठोर एवं अमानवीयता का
घ) अत्यंत भावुक एवं संवेदनशील पिता का

(iv) ड्राइवर चूड़ियों को बस में से क्यों नहीं हटाता?

क) क्योंकि चूड़ियाँ उसे अच्छी लगती हैं
ख) क्योंकि चूड़ियों ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा है
ग) क्योंकि चूड़ियाँ उसका ध्यान भंग करती हैं
घ) क्योंकि चूड़ियाँ उसे घर की याद दिलाती है

(v) कवि ने ड्राइवर से किस विषय में पूछा?

क) बस के निजीकरण के विषय में
ख) पिता की संवेदनशीलता के विषय में

ग) मुनिया के विषय में　　　　घ) चूड़ियों के विषय में

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

(i) कवि के अनुसार कौन लोग भूख शांत करने में लगे हैं?

क) कुशल अभिनेता　　　　ख) भिखारी

ग) व्यापारी　　　　घ) सभी विकल्प सही हैं

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में वर्णित भूख से उत्पन्न स्थितियों में सर्वाधिक मार्मिक स्थिति कौन-सी है?

क) पेट भरने के लिए दिनभर धूप में शिकार खोजना　　　　ख) पेट भरने के लिए पर्वतों पर आजीविका खोजना

ग) पेट भरने के लिए नीच कर्म करना　　　　घ) पेट भरने के लिए बेटा-बेटी को भी बेचना

(iii) पेट की आग को कैसे शांत किया जा सकता है?

क) ईश्वर कृपा से　　　　ख) अनुचित कर्म करके

ग) निम्न कार्य करके　　　　घ) कुछ भी कार्य न करके

(iv) **पेट की आग** मनुष्य को क्या करने पर मज़ूर कर देती है?

क) नौकरी करने पर　　　　ख) सुकर्म करने पर

ग) भजन करने पर　　　　घ) धर्म-अधर्म करने पर

(v) प्रस्तुत काव्यांश के लेखक और पाठ का नाम लिखिए।

क) लक्ष्मण-मूच्छा और राम का विलाप, (तुलसीदास)　　　　ख) सहर्ष स्वीकारा है, (गजानन माधव मुक्तिबोध)

ग) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, (हरिवंश राय बच्चन)　　　　घ) कैमरे में बंद अपाहिज (रघुवीर सहाय)

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल-के-दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति? (धर्मवीर भारती)

(i) किन बातों को पचास वर्षों से अधिक समय हो चुका है?

क) विनोबा भावे की बातों को
ख) जीजी की बातों को
ग) सभी विकल्प सही हैं
घ) गाँधीजी की बातों को

(ii) गद्यांश के अनुसार आज के लोगों का लक्ष्य क्या है?

क) स्वार्थ सिद्धि करना
ख) आत्म बलिदान की रक्षा करना
ग) त्याग भावना को बढ़ावा देना
घ) देश की सेवा करना

(iii) आजकल हम लोग चटखारे लेकर किसकी बातें करते हैं?

क) फिल्मों की
ख) समाज व देश की
ग) गाँवों की
घ) भ्रष्टाचार की

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): हम अपने देश के लिए बहुत कुछ करते हैं।
कारण (R): त्याग की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
i. लेखक ने पचास वर्ष पूर्व बातें बताई थी।
ii. हम त्याग करना नहीं चाहते हैं।
iii. स्वार्थ ही आज के मनुष्य का लक्ष्य है।
उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) विकल्प (i)
ख) सभी विकल्प सही हैं

ग) विकल्प (iii) घ) विकल्प (ii)

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[5]**

(i) समाचार लेखन की प्रभावशाली शैली कौन-सी है?

क) वर्णनात्मक शैली
ख) उल्टा पिरामिड शैली
ग) पिरामिड शैली
घ) विवेचनात्मक शैली

(ii) रेडियो समाचार की भाषा ऐसी हो-

क) जो समाचार वाचक आसानी से पढ़ सकें
ख) जिसमें आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो
ग) जिसमें सामासिक और तत्सम शब्दों की बहुलता हो
घ) जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का इस्तेमाल हो

(iii) भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचर पत्रों में लिखने वाले पत्रकार को क्या कहते हैं?

क) अल्पकालिक
ख) संपादक
ग) अंशकालिक
घ) फ्री लांसर

(iv) हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्रिका किसे माना जाता है?

क) उदंत मार्तंड
ख) केसरी
ग) गरुड़ पत्रिका
घ) कर्मवीर

(v) इनमें से कौन-सा शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?

क) तेजड़िए
ख) मंदड़िए
ग) बिकवाली
घ) रन आउट

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[10]**

(i) **सिल्वर वैडिंग** पाठ के आधार पर चूनेदानी कहकर किस का मजाक उड़ाया जाता है?

क) पोशाक का
ख) चश्मे का
ग) साइकिल का
घ) घड़ी का

(ii) यशोधर बाबू जुड़े हुए हैं-

क) विलायती जीवन से
ख) सरकारी कार्यालय से

ग) पुरानी परंपराओं से | घ) आधुनिकता से

(iii) यशोधर बाबू अपने बीमार बहनोई को देखने कहाँ जाना चाहते थे?

क) अहमदाबाद | ख) राजस्थान

ग) पटना | घ) इलाहाबाद

(iv) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

i. यशोधर दकियानूसी विचार के व्यक्ति थे।

ii. पार्टी में नहीं आने के लिए यशोधर बाबू ध्यान में बैठ गए।

iii. यशोधर बाबू बच्चों पर अपनी शासन चलाना चाहते थे।

iv. किशनदा एक मर्यादित पुरुष थे।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) सभी विकल्प सही हैं | ख) केवल (iii)

ग) (i) और (ii) | घ) केवल (iv)

(v) **जूझ** पाठ के आधार पर लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?

क) जंगली सूअर के समान | ख) चीते के समान

ग) शेर के समान | घ) कुत्ते के समान

(vi) लेखक आनंद यादव का जन्म कब हुआ?

क) 1944 | ख) 1935

ग) 1922 | घ) 1990

(vii) दादा राव सरकार का नाम सुनते ही उनसे मिलने क्यों चला गया?

क) इनमें से कोई भी नहीं | ख) दादा ने राव सरकार से उधार ले रखा था

ग) दादा राव सरकार से डरता था | घ) राव सरकार गाँव के सम्मानित व्यक्ति थे

(viii) सिंधु घाटी में कौन सी धातु की मात्रा पर्याप्त थी? |**अतीत में दबे पाँव**|

क) हीरा और सोना | ख) पत्थर और तांबा

ग) पीतल और मोती | घ) लोहा और पत्थर

(ix) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था। ये टीले-

क) प्राकृतिक थे	ख) मानव कृत थे

ग) इनमें से कोई नहीं	घ) जानवरों द्वारा बने थे

(x) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर भग्न इमारत में कितने खंभे हैं?

क) 15 खंभे	ख) 40 खंभे

ग) 30 खंभे	घ) 20 खंभे

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) रेडियो नाटक की कहानी चुनते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(ii) इंटरनेट पत्रकारिता क्या है ?

(iii) वे कौन से कारण हैं जो किसी भी लेखन को विशिष्ट बना देते हैं?

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये: **[6]**

(i) **आधुनिक फैशन** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(ii) **मनोरंजन के आधुनिक साधन** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iii) **साक्षरता और संचार-माध्यम** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iv) **काश! मेरे पंख होते** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[8]**

(i) **चुनाव प्रचार का एक दिन** पर एक फीचर लिखिए।

(ii) **लक्ष्मी नगर में चोरों ने केवल आठ मिनट में आठ कारों की बैटरी की चोरी की** विषय पर समाचार लिखिए।

(iii) दलितों पर अत्याचार विषय पर एक आलेख लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) **दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!** कविता एक गीत का उद्देश्य बताइए।

(ii) कवि कुंवर नारायण के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है?

(iii) **बादल राग** कविता में कवि ने अट्टालिका को **आतंक-भवन** क्यों कहा है?

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

(ii) **बाज़ारूपन** से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

(iii) **पहलवान की ढोलक** पाठ के आधार पर कहानी में पंक्ति **कफ़न की क्या जरूरत है** से क्या अभिप्राय है?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) फ़िराक की रुबाइयों में घरेलू वातावरण के मोहक चित्र हैं- इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने **सबसे** शब्द का प्रयोग कई बार किया है, क्या यह सार्थक है?

(iii) **बगुलों के पंख** कविता के आधार पर बताइए कि कवि किसे रोक कर रखना चाहता है और क्यों?

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) कैसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं? वे **बाज़ारूपन** को कैसे बढ़ाते हैं?

(ii) शिरीष, अवधूत और गांधीजी एक-दूसरे के समान कैसे हैं? **शिरीष के फूल** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(iii) आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

SOLUTION

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

1971 के भारत-पाक युद्ध में समुद्र में जीत हासिल करने में भारतीय नौसेना द्वारा निभाई गई निणार्यक भूमिका की याद में प्रति वर्ष 04दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम अपने शहीदों को श्रध्दांजलि अर्पित करते हैं तथा अपने सेवानिवृत्त सैनिकों और युद्ध-विधवाओं के बलिदान को याद करते हैं। इस दिन भारतीय नौसेना राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति अपनी वचनबद्धता और निष्ठा को दोहराती है। भारत की समुद्री शक्ति के प्रमुख उपादान और अभिव्यक्ति के रूप में समुद्री अधिकार-क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा की निगरानी और उसमें बढोत्तरी के लिए भारतीय नौसेना एक अहम भूमिका का निर्वाह करती है अधिकांशत: जनता की नजरों से दूर 'खामोशी के साथ काम करने वाली इस सेना' के आकार और क्षमता में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वृद्धि हुई है, जो सतत रूप से बढ़ते इसके कार्यक्षेत्र तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में इसके बढ़ते महत्व के अनुरूप है। नौसेना की सक्रियात्मक गतिविधियों में तदनुसार संगत विस्तार हुआ है तथा इसमें हिंद महासागरीय क्षेत्र तथा उससे परे के क्षेत्रों का भी समावेश हो गया है। यह जानकर शुख्द अनुभूति होती है कि नौसेना हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की निरंतर चौकसी कर रही है और उनमे पेश आने वाले खतरों और चुनौतियों का हमेशा तेजी से और पूरी दक्षता के साथ मुकाबला किया है। समुद्री डकैती की रोकथाम, प्राक्रतिक आपदाओं और मानवीय त्रासदी के दौरान तत्काल सहायता उपलब्ध कराने में भारतीय नौसेना की अनवरत प्रतिवद्धता वास्तव में सराहनीय है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे समर्पित और निष्ठावान नौसेना कार्मिक राष्ट्र द्वारा उन्हें सौंपे गए दायित्वों को पूरा करने के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे।

(i) (ii) परम्परा से मिले-जुले
(ii) (i) 1971 में
(iii) (i) विशाल समुद्री सीमा की चौकसी कर रही है।
(iv) (iii) महत्वपूर्ण भूमिका
(v) (iii) 4 दिसंबर
(vi) (i) राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति वचनबद्धता को निभाती है।
(vii) (iii) I और III
(viii) (ii) हिन्द महासागर से परे
(ix) (i) हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की
(x) (i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हम जब होंगे बड़े, देखना
ऐसा नहीं रहेगा देश।
अब भी कुछ लोगों के दिल में
नफरत अधिक प्यार है कम,

हम जब होंगे बड़े, घृणा का
नाम मिटा कर लेंगे दम।
हिंसा के विषमय प्रवाह में
कब तक और बहेगा देश?
भ्रष्टाचार, जमाखोरी की
आदत बड़ी पुरानी है,
ये कुरीतियाँ मिटा हमें तो
नई चेतना लानी है।
एक घरौंदे जैसा आखिर
कितना और ढहेगा देश ?
इस की बागडोर हाथों में
जरा हमारे आने दो,
पाँव हमारे थोड़े-से बस,
जीवन में टिक जाने दो।
हम खाते है शपथ, दुर्दशा
कोई नहीं सहेगा देश।
हम भारत का झंडा हिमगिरि
से ऊँचा फहरा देंगे,
रेगिस्तान बंजरों तक में
हरियाली लहरा देंगे।
घोर अभावों की ज्वाला में
बिल्कुल नहीं दहेगा देश।

(i) **(क)** अधिनायक
व्याख्या: अधिनायक

(ii) **(घ)** कवि के हाथ में बागडोर आएगी
व्याख्या: कवि के हाथ में बागडोर आएगी

(iii) **(घ)** संकल्प का
व्याख्या: संकल्प का

(iv) **(ख)** घृणा का
व्याख्या: घृणा का

(v) **(घ)** युवावस्था
व्याख्या: युवावस्था

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता भी तो है।
सामने गियर के ऊपर
हुक से लटका रखी हैं
काँच की चार गुलाबी चूड़ियाँ
बस की रफ्तार के मुताबिक

हिलती रहती हैं।
झुक कर मैंने पूछ लिया
खा गया मानो झटका
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला हाँ साहब
लाख कहता हूँ नहीं मानती है मुनिया।
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ
किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से

(i) **(ख)** बस ड्राइवर और एक पिता दोनों की
व्याख्या: बस ड्राइवर और एक पिता दोनों की

(ii) **(ग)** चूड़ियाँ किसने लटकाई हैं
व्याख्या: चूड़ियाँ किसने लटकाई हैं

(iii) **(घ)** अत्यंत भावुक एवं संवेदनशील पिता का
व्याख्या: अत्यंत भावुक एवं संवेदनशील पिता का

(iv) **(ख)** क्योंकि चूड़ियों ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा है
व्याख्या: क्योंकि चूड़ियों ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा है

(v) **(घ)** चूड़ियों के विषय में
व्याख्या: चूड़ियों के विषय में

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

(i) **(घ)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

(ii) **(घ)** पेट भरने के लिए बेटा-बेटी को भी बेचना
व्याख्या: पेट भरने के लिए बेटा-बेटी को भी बेचना

(iii) **(क)** ईश्वर कृपा से
व्याख्या: ईश्वर कृपा से

(iv) **(घ)** धर्म-अधर्म करने पर
व्याख्या: धर्म-अधर्म करने पर

(v) **(ख)** सहर्ष स्वीकारा है, (गजानन माधव मुक्तिबोध)
व्याख्या: सहर्ष स्वीकारा है, (गजानन माधव मुक्तिबोध)

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं। कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल-के-दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति? (धर्मवीर भारती)
(i) **(ख)** जीजी की बातों को
व्याख्या: जीजी की बातों को
(ii) **(क)** स्वार्थ सिद्धि करना
व्याख्या: स्वार्थ सिद्धि करना
(iii) **(घ)** भ्रष्टाचार की
व्याख्या: भ्रष्टाचार की
(iv) **(ख)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
व्याख्या: कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(v) **(ख)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-
(i) **(ख)** उल्टा पिरामिड शैली
व्याख्या: समाचार लेखन की प्रभावशाली शैली उल्टा पिरामिड शैली है।
(ii) **(घ)** जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का इस्तेमाल हो
व्याख्या: जिसमें आम बोलचाल की भाषा के साथ-साथ सटीक मुहावरों का इस्तेमाल हो।
(iii) **(घ)** फ्री लांसर
व्याख्या: फ्री लांसर
(iv) **(क)** उदंत मार्तंड
व्याख्या: हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' को माना जाता है, जो कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकला था।
(v) **(घ)** रन आउट
व्याख्या: रन आउट शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-
(i) **(घ)** घड़ी का
व्याख्या: घड़ी का
(ii) **(ग)** पुरानी परंपराओं से
व्याख्या: पुरानी परंपराओं से

(iii) **(क)** अहमदाबाद

व्याख्या: यशोधर बाबू के जीजाजी अहमदाबाद में रहते थे। वे बीमार थे और यशोधर बाबू उन्हें देखने जाना चाहते थे पर अपनी पत्नी और बच्चों की नाराज़गी के कारण वे उन्हें देखने नहीं जा सके।

(iv) **(क)** सभी विकल्प सही हैं

व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

(v) **(क)** जंगली सूअर के समान

व्याख्या: जंगली सूअर के समान

(vi) **(ख)** 1935

व्याख्या: 1935

(vii) **(घ)** राव सरकार गाँव के सम्मानित व्यक्ति थे

व्याख्या: राव सरकार गाँव के सम्मानित व्यक्ति थे

(viii) **(ख)** पत्थर और तांबा

व्याख्या: सिंधु घाटी में पत्थर और ताँबा पर्याप्त मात्रा में थे। पत्थर सिंध में और तांबा राजस्थान में पाया जाता था। खेती के उपकरण भी इन्हीं धातुओं से बनाए जाते थे।

(ix) **(ख)** मानव कृत थे

व्याख्या: पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था और ये टीले मानव कृत थे।

(x) **(घ)** 20 खंभे

व्याख्या: भग्न इमारत में 20 खंभे हैं।

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **कहानी मौलिक हो या चाहे किसी और स्रोत से ली हुई। उसमें निम्न बातों का ध्यान शरूर रखना होगा:-**

i. कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो क्योंकि रेडियो पर बहुत श्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।

ii. रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-30 मिनट ही होती है।

iii. पात्रों की संख्या सीमित हो। श्रोता सिर्फ़ आवाश के सहारे चरित्रों को याद रख पाता है, ऐसी स्थिति में रेडियो नाटक में यदि बहुत श्यादा किरदार हैं तो उनके साथ एक रिश्ता बनाए रखने में श्रोता को दिक्कत होगी। 15 मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में पात्रों की अधिकतम संख्या 5-6 हो सकती है।

(ii) इंटरनेट पर विभिन खबरों का आदान-प्रदान और अलग-अलग अखबारों का प्रकाशन ही इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है । इंटरनेट पत्रकारिता का आरंभ 1982 के आस-पास से हुआ है । भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत लगभग 1993 से हुई । आज के समय में तमाम अखबार और पत्रिकायें हैं, जिन्हें हम इंटरनेट से आसानी से पा सकते हैं ।

(iii) कोई भी लेखन करते समय यह ध्यान देना जरूरी है कि हमारा पाठक, दर्शक या श्रोता कौन है, हमारी बातें उन्हें समझ में आ रहीं हैं या नहीं, हमारे तर्क और तथ्य आपस में मेल खा रहे हैं कि नहीं। हमारी अभिव्यक्ति उनकी जिज्ञासा या समस्या का समाधान करने सक्षम हो ये लेखन को विशिष्ट बनाने के लिए अति आवश्यक है।

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:

(i) **आधुनिक फैशन**

एक फ्रांसीसी विचारक का कहना है-आदमी स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन पैदा होते ही तरह-तरह की जंज़ीरों में जकड़ जाता है। वह परंपराओं, रीति-रिवाजों, शिष्टाचारों, औपचारिकताओं का गुलाम हो जाता है। इसी क्रम में वह फ़ैशन से भी प्रभावित होता है। समय के साथ समाज की व्यवस्था में बदलाव आते रहते हैं। इन्हीं बदलावों के तहत रहन-सहन में भी परिवर्तन होता है। किसी भी समाज में फ़ैशन वहाँ की जलवायु परिवेश तथा विकास की अवस्था पर निर्भर करता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ वहाँ के निवासियों के जीवन-स्तर में परिवर्तन आता जाता है।

20वीं सदी के अंतिम दौर से फ़ैशन ने उन्माद का रूप ले लिया। फ़ैशन को ही आधुनिकता का पर्याय मान लिया गया है। इस फ़ैशन की अधिकांश बातें आम जीवन से दूर होती हैं। फ़ैशन से संबंधित अनेक कार्यक्रमों का रसास्वादन अधिकांश लोग नहीं ले सकते, परंतु आधुनिकता और फ़ैशन की परंपरा का निर्वाह करते हैं। फ़ैशन का सर्वाधिक असर कपड़ों पर होता है। समाज का हर वर्ग इससे प्रभावित होता है।और आज के दौर में हमारी नई पीढ़ी ने फ़ैशन का पर्याय ही बदल दिया है, अथवा अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि आज समाज में फ़ैशन के नाम पर अंधविश्वास फैला हुआ है।

आधुनिकता और फैशन वर्तमान समाज में अब स्वीकार्य तथ्य हैं। फैशन के अनुसार अपने में परिवर्तन करना भी स्वाभाविक प्रवृन्ति है, लेकिन इसके अनुकरण से पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि इससे व्यक्तित्व में वृद्धि होती है या नहीं। सिर्फ फ़ैशन के प्रति दीवाना होना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं।

(ii) **मनोरंजन के आधुनिक साधन**

प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन प्राकृतिक वस्तुएँ और मनुष्य के निकट रहने वाले जीव-जंतु थे। इसके अलावा वह पत्थर के टुकड़ों, कपड़े की गेंद, गुल्ली-डंडा, दौड़, घुड़दौड़ आदि से भी अपना मनोरंजन करता था। किंतु मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसके मनोरंजन के साधनों में भी बढ़ोत्तरी और बदलाव आता गया। आज प्रत्येक आयुवर्ग की रुचि के अनुसार मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग करके लोग आनंदित हो रहे हैं।लेकिन जैसे-जैसे मनोरंजन के साधनों में बढ़ोतरी हुई है, वैसे-वैसे हमारे मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है।

मनोरंजन के आधुनिक साधनों में रेडियो सबसे लोकप्रिय सिद्ध हुआ। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों की स्थापना और उन पर प्रसारित क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों ने इसकी आवाज को घर-घर तक पहुँचाया।रेडियो के पश्चात टीवी ने भी मनोरंजन के क्षेत्र में एक आवश्यक भूमिका निभाई।

शिक्षित वर्ग के मनोरंजन के अन्य साधन हैं-पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ना तथा उनसे आनंद प्राप्त करना या कवि-सम्मेलन, नाट्यमंचन, मुशायरे के आयोजन में भाग लेना आदि। वर्तमान काल में विज्ञान की प्रगति के कारण मोबाइल फोन में ऐसी तकनीक आ गई है, जिससे गीत-संगीत सुनने, फ़िल्में देखने का काम अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है। इस प्रकार मनोरंजन की दुनिया सिमटकर मनुष्य की जेब में समा गई है। निष्कर्षत: आज अपनी आय के अनुसार व्यक्ति अपना मनोरंजन कर सकता है क्योंकि मनोरंजन की दुनिया बहुत विस्तृत हो चुकी है।

(iii) **साक्षरता और संचार-माध्यम**

भारत में प्राचीनकाल से ही मानव-मूल्यों के प्रचार-प्रसार की महान परंपरा रही है। मानव-विकास के सबसे महत्वपूर्ण घटक 'शिक्षा' के प्रसार में संत-महात्माओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने मौखिक तरीकों से सामाजिक परिवर्तन का प्रयास किया। इसी परंपरा में जनसंचार के लोकमाध्यम; जैसे-कठपुतली नृत्य, कथावाचन, लोकसंगीत, नौटंकी आदि, विकसित हुए जिन्होंने लोकशिक्षा का प्रसार किया। आज समाचार-पत्र, रेडियो, टी०वी०, सिनेमा, वीडियो आदि प्रचार के अत्याधुनिक माध्यम विकसित हो चुके हैं।

समाचार-पत्रों ने अपनी कुछ सीमाओं के बावजूद साक्षरता के प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया है। मनोरंजन से लेकर अनेक शिक्षाप्रद कथाओं, परिचर्चाओं, भेंटवार्ताओं एवं शिक्षा संबंधी योजनाओं की जानकारी जन-साधारण को देकर निरक्षरता के विरुद्ध लोगों में जागृति पैदा करते हैं। हालाँकि आकाशवाणी सहज, सुलभ व विस्तृत पहुँच के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। साक्षरता को जन-अभियान बनाने तथा शिक्षा के महत्व का संदेश गाँव-गाँव, गली-गली पहुँचाने में रेडियो का योगदान सर्वविदित है।लेकिन अब इनके स्तर में भी गिरावट आई है, अब अखबार भी पूँजीवाद से ग्रस्त हो चुके हैं, अब वे आवश्यक समाचारों के अनावश्यक समाचार देते हैं, जो कुछ उपयोगी साबित नहीं होते।

गाँवों में आज भी स्थिति बेहद खराब है। वहाँ पर पारंपरिक संचार-माध्यमों के साथ आधुनिक संचार-माध्यमों का प्रभावशाली प्रयोग किया जा सकता है। इससे संचार-माध्यमों व आम लोगों के बीच संचार-रिक्तता की स्थिति समाप्त हो जाएगी और साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

(iv) **काश! मेरे पंख होते**

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसके पास कल्पना करने की शक्ति है। कोई भी इंसान उस वस्तु अथवा कार्य की भी कल्पना कर सकता है, जो वास्तव में कभी संभव नहीं हो। हर किसी इंसान की तरह मेरी भी एक सोच है कि काश मेरे पंख होते, तो मैं भी आसमान में पक्षियों की तरह उड़ पाता और आसमान की सैर करता। यदि मेरे पंख होते तो मैं किसी की पकड़ में नहीं आता और तेजी से कहीं भी उड़ जाता। अक्सर हम इंसानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए वाहनों की जरूरत पड़ती है, लेकिन अगर मेरे पंख होते तो मुझे किसी भी वाहन की जरूरत ना होती क्योंकि मेरे पंख ही मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते। मेरे पंख होते तो कितना अच्छा होता।

हम सभी को जब भी अपने किसी नजदीकी रिश्तेदार या किसी दोस्त की याद आती है, तो हम उससे फोन पर बातचीत करते हैं। और इससे हमारा मनोरंजन भी होता है, लेकिन मेरे पंख होते तो मुझे फोन पर बात करने की जरूरत नहीं पड़ती। मैं पक्षियों की तरह आसमान में उड़ता हुआ उस जगह पर पहुंचकर अपने दोस्तों रिश्तेदारों से बातचीत करता, तो मुझे बेहद खुशी होती। मैं पक्षियों की तरह, एक पतंग की तरह आसमान की सैर कर रहा होता। काश ! मेरे पंख होते।

मैं उड़ना चाहता हूँ, आसमान की सैर करना चाहता हूँ। लोग वायुयानों के द्वारा आसमान की सैर करते हैं, लेकिन इनके द्वारा आसमान में सैर करने की बात अलग है और अपने खुद के पंखों से आसमान में उड़ना एक बात अलग है। काश मेरे पंख होते तो मैं आसमान की ऊंचाइयों में उड़ता और ऐसा करने में मुझे खुशी का अनुभव होता। काश ! मेरे पंख होते।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **चुनाव प्रचार का एक दिन**

चुनाव लोकतंत्र के लिए एक त्योहार से कम नहीं है।चुनाव लोकतांत्रिक प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से ही जनता अपने प्रतिनिधियों का चयन करती है, जो आगे चलकर शासन प्रणाली को सँभालते हैं। सभी प्रतिनिधि अपने प्रभुत्व को स्थापित करने के लिए चुनाव प्रचार को माध्यम बनाते हैं। चुनाव-प्रचार मतदाताओं को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाता है। चुनाव प्रचार में लाउडस्पीकर, पोस्टर, पैंपलेट आदि अन्य प्रकार की सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है। चुनाव प्रचार में प्रतिनिधि जोकि भिन्न-भिन्न पार्टियो के उम्मीदवार होते हैं, वह जनता के घर-घर जाकर अपने लिए स्वयं वोट माँगते हैं। चुनाव प्रचार की अनेक प्रक्रियाएँ होती हैं, सब के प्रचार के अपने अलग अलग ढंग होते हैं। अधिकांश लोग चुनाव प्रचार के दौरान नोटों की मदद से वोट खरीदते हैं,तो कुछ लोग ईमानदारी से चुनाव प्रचार करते हैं ,परंतु ईमानदारों की संख्या बहुत कम है।
चुनाव प्रचार की प्रक्रिया चुनाव होने के दो दिन पहले ही बंद हो जाती है। सभी उम्मीदवार अपने-अपने क्षेत्र मे नए-नए तौर तरीकों से जनता को लुभाने का कार्य करते हैं। चुनाव-प्रचार के दौरान बहुत से प्रत्याशी गलत व अनैतिकता का प्रयोग भी करते हैं। चुनाव प्रचार के समय प्रत्याशी अपना वोट पाने के लिए खरीद-फरोख़्त की राजनीति को भी जन्म देते हैं।
चुनाव प्रचार के दो पक्ष हैं, जिसमे पहला यह है कि इसके माध्यम से उम्मीदवार स्वयं को मतदाताओं से परिचित करवाता है और अपने एजेंडा को उन मतदाताओं के सम्मुख प्रस्तुत करता है।
कहा जाए तो इस सकारात्मक तरीके से वह मतदाताओं पर प्रभाव स्थापित कर अपना वोट पक्का करना चाहता है, परंतु इसका दूसरा तरीका अत्यंत बुरा है, जो समाज में कुप्रवृत्तियों को जन्म देता है तथा राजनीति को एक गंदा खेल बनाकर प्रस्तुत करता है। अंत में कहना चाहिए कि चुनाव प्रचार बहुत ही रोमांचकारी प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को सही रूप से प्रयोग में लाया जाए, तो हम सही प्रत्याशी को चुनकर देश के भविष्य को सुनिश्चित कर सकेंगे।

(ii) **आठ मिनट में आठ कारों की बैटरी चोरी**

नई दिल्ली, वरिष्ठ संवाददाता।
लक्ष्मी नगर में चोरों ने सिर्फ आठ मिनट में आठ कारों से बैटरियाँ चोरी कर लीं। खास बात यह है कि इन चोरों ने सिर्फ मारुति कंपनी की कारों को ही निशाना बनाया। मंगलवार सुबह चार बजे हुई घटना गली में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। पीड़ित लोगों ने शकरपुर थाने में चोरी का मामला दर्ज कराया है।
इलाके में रहने वाले शैलेंद्र नारंग ने बताया कि चोर उनकी मारुति वैन से बैटरी चोरी कर ले गए।उनके मुताबिक उनकी गली से आठ कारों की बैटरियाँ चोरी की गई। स्थानीय निवासी राधेश्याम ने बताया कि एक साल के भीतर यह तीसरी घटना है, जब उनकी कार से बैटरी निकाल ली गई। लोगों ने बताया कि ये लोग सिर्फ मारुति की गाड़ियों को निशाना बनाते हैं। यह पूरी घटना गुरुरामदास नगर में रहने वाले बृजेश कौशिक के घर के बाहर लगे सीसीटीवी में कैद हो गई थी।
सीसीटीवी फुटेज देखने पर पता चला कि सुबह चार बजे दो संदिग्ध व्यक्ति सफेद रंग की एक्टिवा से पूरी गली का जायजा लेते हैं और फिर वापस चले जाते हैं। पाँच मिनट बाद वे वापस आते हैं और राजकिशन जैन की गाड़ी को निशाना बनाते हैं। सफेद कुर्ता-पाजामा और सफेद जालीदार टोपी पहने तकरीबन 27-28 वर्षीय युवक फुर्ती से कार का बोनट खोल देता है और जेब से औजार निकालकर बैटरी चुरा लेता है। ऐसा करने में उसे करीब एक मिनट का समय लगता है।

(iii) **दलितों पर अत्याचार**

एक तरफ हम अपने देश में अनेक प्रकार के बदलाव उसके विकास के नाम पर कर रहे हैं, और दूसरी तरफ नीचले तबके के लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहे हैं। हम भले ही 21वी सदी में जी रहे हैं, पर हमारी सोच आज भी प्राचीन काल वाली है। हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों से दलितों पर अत्याचार का विष-वृक्ष तेजी से फैलता ही जा रहा है। वर्तमान में तो इस समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। सामाजिक बदलाव और तरक्की की बातें और दावे चाहे जितने कर लिए जाएँ, मगर ये सच्चाई से काफी दूर है। सच यह है कि गाँवो में छुआछूत आज भी कायम हैं। इस सामाजिक विकृति की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि सरकारी स्वास्थ्यकर्मी दलितों के घर जाने से कतराते है, स्कूलों में उनके बच्चों को अलग बिठाकर खाना दिया जाता है। डाकिये दलितों को चिट्ठी देने नहीं जाते और उन्हें सार्वजनिक जल स्रोतों से पानी लेने से भी रोका जाता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड के अनुसार, बिहार में दलितों के प्रति अत्याचार पहले से बढ़ा है। राज्य में वर्ष 2005 में दलितों पर अत्याचार के 1,572 मामले दर्ज हुए थे, लेकिन पिछले साल इनकी संख्या 2,786 हो गई। उत्तर प्रदेश का भी हाल कुछ ऐसा ही है, जबकि राज्य में दलित आबादी कुल जनसंख्या का 21% है। खास बात यह है कि ये आँकड़े सरकार की निगाह में होने के बावजूद स्थिति बदलने के लिए कुछ खास नहीं किया जा रहा है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यह गीत **निशा निमंत्रण** से उद्धृत है। इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के अनुरूप प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश को व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता यानी तेज़ी भर सकता है। इसी एहसास से हम शिथिलता और जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं। यह गीत समय के गुजर जाने के एहसास में लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुछ कर गुज़रने का ज़ज्बा भी लिए हुए है। कविता की पंक्तियाँ कवि के जीवन में व्याप्त एकाकीपन को अभिव्यक्त करती है और जीवन में प्रेम का महत्त्व बताती है।

(ii) कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़ कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नही पाता। वह मनोरंजन तो पा सकती है परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। कभी-कभी तो बात उलझ जाती है और यदि मजे के लिए लोग उसे समर्थन देने लगते हैं तो उसे स्पष्ट करने के चक्कर में बात पेचीदा हो जाती है।

(iii) 'बादल राग' कविता में कवि निराला ने लिखा है- 'अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन', उन्होंने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि समाज का प्रभुत्वशाली पूँजीपति वर्ग इन महलों में निवास करता है। महलों में निवास करने वाला यह वर्ग हमेशा क्रांति के भय से संकित रहता है। उसका भय, उसकी आशंका इस महल को महल (अट्टालिका) नहीं रहने देते, बल्कि आतंक-भवन बना देते हैं। इस वर्ग का अस्तित्व शोषण तथा दमन में निहित है, इसलिए जब शोषक वर्ग क्रांति की बात सुनता है, तो उसके अंदर आतंक भर जाता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था, हिन्दुओं के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी है। प्राय:नाम व्यक्तित्व का परिचायक होता है किन्तु भक्तिन गरीब थी, उसका पूरा जीवन ससुराल वालों की सेवा करने और पति की मृत्यु के बाद संघर्ष करते हुए व्यतीत हुआ। इस प्रकार उसके

नाम का वास्तविक अर्थ और उसके जीवन का यथार्थ दोनों परस्पर भिन्न थे। इसलिए निर्धन भक्तिन सबको अपना असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

उसे लक्ष्मी नाम उसके माता-पिता ने दिया होगा क्योंकि उन्हें लगा होगा कि बेटी लक्ष्मी का अवतार होती है इसलिए उसके आने से वे तो खुशहाल होंगें ही साथ ही वह जिसके घर जाएगी वे भी धन्य-धान्य से भरपूर हो जाएँगे।

(ii) बाजारुपन से तात्पर्य ऊपरी चमक-दमक से है। जब सामान बेचने वाले बेकार की चीजों को आकर्षक बनाकर मनचाहे दामों में बेचने लगते हैं, तब बाज़ार में बाजारुपन आ जाता है,इसके अलावा धन को दिखावे की वस्तु मान कर व्यर्थ में उसका दिखावा करने वाले ग्राहक भी बाजार में बाजारूपन लाने में सहायक होते हैं।

जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नहीं करते साथ ही जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। इस प्रकार विक्रेता और ग्राहक दोनों ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

मनुष्य की आवश्यकताओं की ज्यादा से ज्यादा पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है।

(iii)फणीश्वरनाथ 'रेणु' की 'पहलवान की ढोलक' एक मार्मिक कहानी है। इसमें लेखक ने गाँव की उस चिरपरिचित अवस्था का अत्यंत ही भावपूर्ण चित्रण किया है I सभी गाँववासी अपनी भावनाओं से ही एक-दूसरे की सहायता कर पाते हैं। वास्तव में, आर्थिक रूप से वे उतने समर्थ नहीं थे कि किसी की आर्थिक सहायता कर सकें। जब महामारी से लगातार घरों में एक-दो लाशें निकलने लगीं, तो वे मानसिक और आर्थिक रूप से इतने टूट गए कि कफ़न तक के लिए भी सोचना पड़ रहा था। अतः लाशें बिना कफ़न के ही बहा देने की सलाह दी जा रही थी।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) फ़िराक की रुबाइयों मे घरेलू जीवन के अत्यंत सुंदर चित्र उपस्थित हैं; जैसे-माँ अपने प्यारे शिशु को लेकर आँगन में खड़ी है, वह उसे झुलाती है, हँसाती है। बच्चे के नहलाने के दृश्य का सजीव चित्रांकन हुआ है। इसी प्रकार दीवाली व रक्षाबंधन जैसे पर्व को जिस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है, वह आम आदमी से जुड़ा हुआ है। बच्चे का किसी वस्तु के लिए ज़िद करना और माँ द्वारा उसे बहलाना जैसे दृश्य आम परिवारों मे भी दिखाई देते है।

(ii) कवि ने हल्की, रंगीन चीज़, कागज़, पतली कमानी के लिए 'सबसे' शब्द का प्रयोग सार्थक ढंग से किया है। कवि ने इसके माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि पतंग के निर्माण में हर चीज़ हल्की होती है क्योंकि वह तभी उड़ सकती है। इसके अतिरिक्त वह पतंग को विशिष्ट दर्जा भी देना चाहता है।

(iii)कवि उमाशंकर जोशी द्वारा 'बगुलों के पंख' कविता के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य को नई युक्तियों से सामने लाया गया है। यहाँ चित्रात्मकता का सुंदर निर्वाह हुआ है। काले बादलों के नीचे से उड़ते बगुलों को देखकर कवि आगे नहीं बढ़ पाता और ठहर सा जाता है। वह इस दृश्य को आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहता। वह इस नयनाभिराम दृश्य को देखने के लिए सब कुछ भूलकर अटका-सा रहता है। वह इस माया से स्वयं को बचाने की गुहार तो करता है पर इस दृश्य के जादू को अपलक निहारना भी चाहता है। कवि इसे रोके रखने की बात अपने मन पर पड़ने वाले इसके अत्यधिक प्रभाव के कारण करता है।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लेखक कहता है कि समाज में कुछ लोग क्रय-शक्ति के बल में बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते हैं, परंतु उन्हें अपनी ज़रूरत का पता नहीं होता। ऐसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे धन के बल पर बाज़ार में कपट को बढ़ावा देते हैं। वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं। सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। वे शान के लिए उत्पाद खरीदते हैं। इस परकार से वे बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

(ii) लेखक को शिरीष, अवधूत और गांधीजी में अनेक समानताएँ दृष्टिगत होती हैं। शिरीष और अवधूत बाह्य कठिन परिस्थितियों में एक समान रहते हैं | उन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जेठ की जलती धूप में भी शिरीष का वृक्ष फूलों से लदा रहता है। अवधूत भी परमात्मा के आनंद में डूबे रहते हैं तथा कठिन परिस्थितियों में भी आनंद में मस्त रहते हैं। वे भी अपने आश्रय में आने वाले लोगों को सुख देते हैं। महात्मा गांधी में भी कठोरता के साथ कोमलता का गुण विद्यमान था। वे भी मार-काट, अग्निदाह, खून-खराबों के बीच अटल या स्थिर बने रहते थे। इस प्रकार शिरीष, अवधूत और गांधीजी में कुछ विशेषताएँ एक जैसी हैं।

(iii) डॉ. आंबेडकर के अनुसार उनका आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृता पर आधारित होगा। समाज में आपसी प्रेम एवं भाईचारे की भावना होगी तथा सभी सदस्य एक दूसरे के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव रखेंगे। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता रहेगी और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पूर्ण अवसर उपलब्ध होगा। उनके मतानुसार, एक संतुलित एवं आदर्श समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रारंभ से ही समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए।